INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January-2018

SPECIAL ISSUE - XXXIII

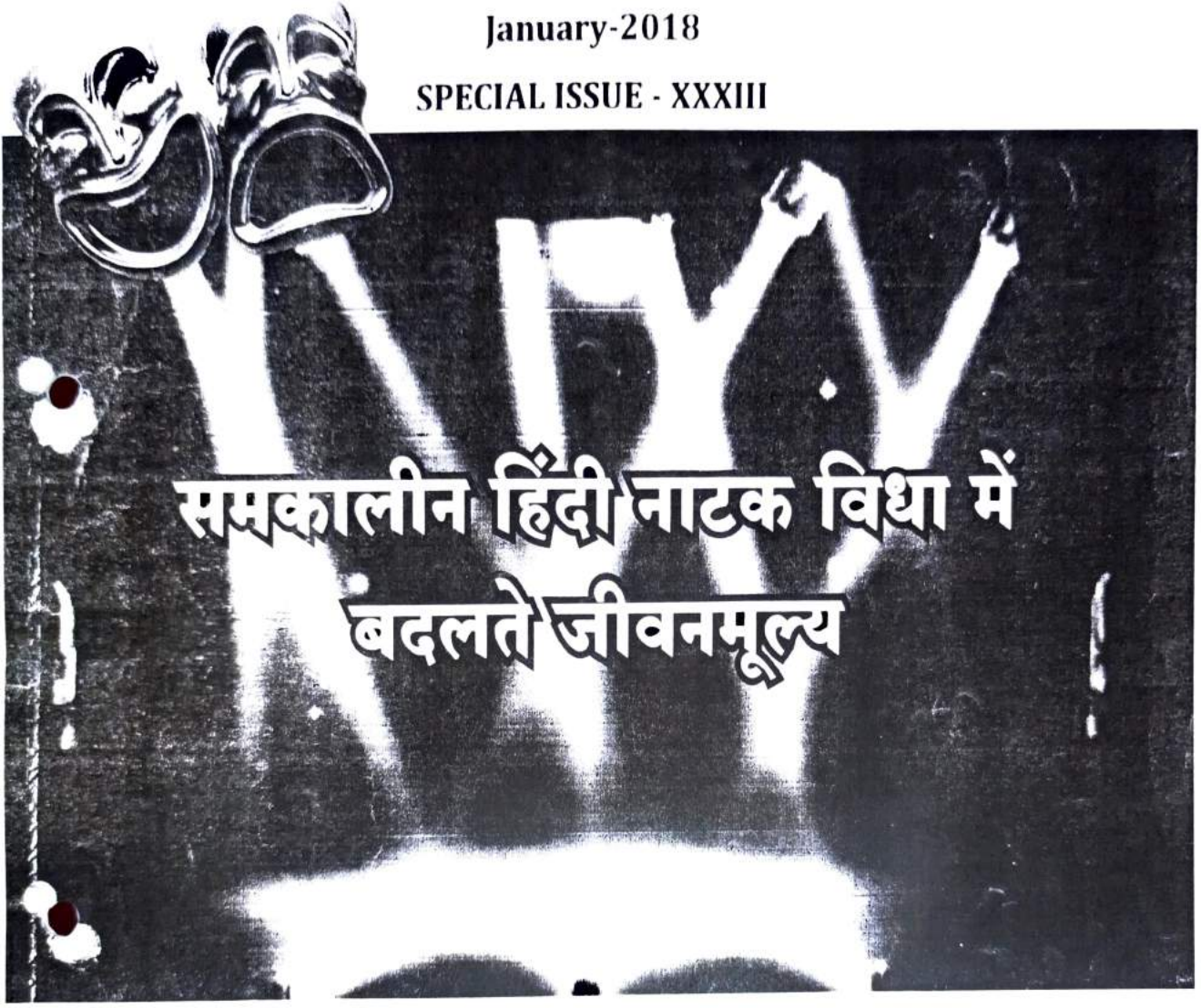

समकालीन हिंदी नाटक विधा में बदलते जीवनमूल्य

अतिथी संपादक :

डॉ. आर.के. दातीर

प्राचार्य,

एस.एम.बी.एस.टी. महाविद्यालय, संगमनेर,

तह. संगमनेर, जि. अहमदनगर (महाराष्ट्र)

मुख्य संपादक :

डॉ. धनराज धनगर

सहाय्यक प्राध्यापक,

कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, येवला,

तह. येवला, जि. नासिक (महाराष्ट्र)

विशेषांक कार्यकारी संपादक : **डॉ. शशी साळुंखे**

एस.एम.बी.एस.टी. महाविद्यालय, संगमनेर, तह. संगमनेर, जि. अहमदनगर (महाराष्ट्र)

This Journal is indexed in :
- UGC Approved Journal List No. 40705 & 44117
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- Universal Impact Factor

RESEARCH JOURNEY

समकालीन नाटक में शिल्पगत आधुनिकता : मन्नू भंडारी लिखित 'बिना दीवारों के घर' - एक मूल्यांकन

सुनिता रावसाहेब हुन्नरगी
शोधछात्रा
जी.आय.बागेवाडी महाविद्यालय, निपाणी, जि. बेळगाव, कर्नाटक

प्रस्तावना :

भारतवर्ष में नाट्य-साहित्य की परम्परा बहुत प्राचीन रही हैं । इसका प्रमाण हमें भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र' में मिलता हैं । हिंदी साहित्य में भारतेन्दु के समय से पूर्व में रंगमंच पर विभिन्न रुपों में शैलि को प्रस्तुत करते थे, जैसे कि स्वांग, नौटंकी, लोकगीत, रामलीला तथा रासलीला अनेक रुपों की सुदीर्घ परंपरा रही है ।

हिंदी में नाटकों का प्रारंभ 'भारतेन्दु हरिश्चंद्र' (१८५०-१८८२) से माना जाता हैं । भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने भारतीय और पाश्चात्य दोनों नाट्य रचना में अपनी लेखनी चलाई । उस काल में भारतन्दु तथा अन्य समकालीन नाटककारों ने लोक चेतना के विकास के लिए अनेक नाटकों की रचना की, ताकि वे नाटक उस समय सामाजिक समस्याओं को नाटकों में अभिव्यक्त होने का अच्छा सुअवसर मिंला । इस प्रकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के सत्प्रयत्नों से हिंदी नाटक का रंगमंच और नाट्य-लेखन की दृढ़ परम्परा चली । उसके बाद हिंदी नाटक ने उत्तरोत्तर उन्नति की ओर साथ ही पश्चिम का अधिकाधिक प्रभाव पडा । भारतेन्दु के हिंदी-साहित्य में पदार्पण करते ही नाटक का प्रत्येक क्षेत्र एक नवीन चेतना से भर उठा । भरतेंदु ने दो प्रकार के नाटकों की रचना की, मौलिक और अनुदित । मौलिक नाटकों में 'वैदिकी हिंसा न भवति', 'चन्द्रावली' 'विष्यस्य विषमौषधम, "भारत-दुर्दशा", "नीलदेवी", 'अंधेर नगरी' "प्रेम जोगिनी" आदि हैं । इन नाटकों में भारतेंन्दुजी ने जीवन के प्रायः सभी क्षेत्रों से सामग्री लिया है । अनुदित नाटकों में 'विद्या सुन्दर''पाखण्ड विडम्बनम्' धनंजय विजय, कर्पूर मंजरी, मुद्राराक्षस, भारत-जननी आदि हैं ।

इस युग के अन्य नाटककारों में, बालकृष्ण भट्ट, श्रीनिवास दास, सेठ गोविंददास, राधाकृष्ण दास, चतुरसेन शास्त्री, विष्णू प्रभाकर, 'उपेन्द्रनाथ' अश्क, 'रामकुमार वर्मा' आदि ने ऐतिहासिक, पौराणिक, सामाजिक और समस्यामूलक सम्पूर्ण नाटकों की रचना किया है । समकालीन नाटककारों में, मोहन राकेश, लक्ष्मीनारायण लाल, नरेश मेहता, गिरिजाकुमार माथुर तथा मन्नु भंडारी जी है ।

मन्नू भंडारी "बिना दीवारों के घर" - एक मूल्यांकन :

मन्नू भंडारी जी का जन्म ३ अप्रैल १९३१ में मध्यप्रदेश में मंदसौर जिले के भानपुरा गाँव में हुआ था । 'बिना दीवारों के घर' (१९६६) में नाटक का प्रथम संस्करण हुआ था । यह नाटक तीन अंको का हैं । इस नाटक में लेखिका ने अजित और शोभा तथा जयन्त और मीना के माध्यम से दांपत्य-जीवन में विसंगति तथा संबंधों की तनावपूर्ण स्थिति को अभिव्यक्त किया गया हैं । इस नाटक का प्रमुख नायक अजित अपनी पत्नी को आवाज देता हैं, वह गाने का रियाज कर रही थी । दोनों में कुछ दिनों से तनाव चल रहा था । अजित पत्नी शोभा पर आरोप करता है कि शोभा ठीक तरह से घर नहीं, चलाती, अप्पी का खयाल नहीं रखती, अजित का कहना है कि घर संभालना औरतों की जिम्मेदारी है । शोभा का कहना है कि पुरुष भी घर की कामों में पत्नी की मदद करें । शोभा विवाह के उपरांत अजित